शब्द–ब्रह्म
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
E ISSN 2320 – 0871
17 सितम्बर 2018
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

कवि आलम : व्यक्तित्व और कृतित्व

डॉ. अंजूबाला सीमार
सहायक आचार्य
श्री कृष्ण सत्संग बालिका महाविद्यालय
सीकर, राजस्थान, भारत

शोध संक्षेप

आलम को हिन्दी साहित्य की रीतिमुक्त काव्य परम्परा का महत्वपूर्ण स्तम्भ माना जाता है। आलम ने विविध काव्य शैलियों का प्रयोग कर अपनी बहुमुखी प्रतिभा का परिचय दिया है। यद्यपि कालक्रम की दृष्टि से रसखान इस धारा के सबसे वरिष्ठ कवि माने जाते हैं तथापि रसखान के काव्य में भक्ति का स्वर प्रधान है जबकि आलम मूलतः स्वच्छन्द श्रृंगारिक कवि हैं और जिस प्रकार की स्वच्छंदता आलम के व्यक्तित्व और कृतित्व में मिलती है उतनी घनानन्द को छोड़कर कदाचित् किसी अन्य कवि में नहीं मिलती। वास्तव में आलम के काव्य में प्रेमोन्मत्त काव्यधारा की सभी प्रवृत्तियों का सुन्दर परिपाक हुआ देखा जाता है। आलम की कविताओं का आस्वादन करते हुए सहृदय प्रभावित हुए बिना नहीं रहता है। इसलिए प्रस्तुत शोध पत्र में कवि आलम के व्यक्तित्व और कृतित्व से सम्बद्ध विविध पक्षों को स्पष्ट किया गया है।

प्रस्तावना

कवि आलम के युग पर विचार करते हुए यह आवश्यक जान पड़ता है कि उनके जीवन काल पर आवश्यक जानकारी प्राप्त करें। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने अपने 'हिन्दी साहित्य के इतिहास' में आलम नाम के दो कवियों का उल्लेख किया है। पहले आलम को अकबर के समय का मुसलमान कवि माना है जिन्होंने सन् 991 हिजरी संवत् 1639-40 में 'माधवानल कामकंदला' के नाम की प्रेम कहानी दोहा-चौपाई में लिखी।[1] दूसरे आलम के बारे में शुक्ल जी लिखते हैं कि ये जाति के ब्राहम्ण थे पर शेख नाम की रंगरेजिन के प्रेम में फँसकर मुसलमान हो गये और उसके साथ विवाह करके रहने लगे। आलम को शेख से जहान नामक पुत्र भी हुआ है। ये औरंगजेब के दूसरे बेटे मुअज्जम के आश्रय में रहते थे जो पीछे बहादुरशाह के नाम से गद्दी पर बैठा। अतः आलम का कविता काल संवत् 1740 से संवत् 1760 तक माना जा सकता है।[2] इस प्रकार आचार्य शुक्ल के उक्त कथनों से आलम के काल का सीमांकन कार्य निर्धारित करना कठिन हो गया है। मिश्र बंधुओं ने यद्यपि आलम को अकबर का समकालीन माना है तथापि उन्होंने लिखा है - "इनका समय अकबर के राजत्व काल में था। शिवसिंह जी ने इसका बनाया हुआ मुअज्जम की प्रशंसा का एक छंद लिखा है यदि यह मुअज्जम औरंगजेब के पुत्र से भिन्न थे, तब तो कोई बात नहीं, नहीं तो ऐसा संभव जान पड़ता है कि आलम नाम के दो कवि हों।"[3]

वस्तुतः शुक्लजी की मान्यता के पीछे श्री शिवसिंह सेंगर द्वारा प्रस्तुत आलम के नाम से मोजमशाह (मुअज्जमशाह) की प्रशस्ति विषयक कवित्त है। यह कवित्त इस प्रकार है -

जानत औलि कितावन को जें निसाफ के माने कहे हैं ते चीन्हें।

पालत हौ इत आलम को उत नीके रहीम के नाम को लीन्हें ।।

मोजमशाह तुम्हैं करता करिबे को दिलीपति हैं वर दीन्हें ।

काबिल हैं ते रहे कितहूँ कहूं काबिल होत हैं काबिल कीन्हें ।।[4]

डॉ. राममूर्ति त्रिपाठी के अनुसार इस छंद में स्पष्ट कहा गया है कि मोजमशाह या मुअज्जमशाह 'आलम' का पालन करता है। निश्चय ही यहां आलम श्लिष्ट पद, जिसका एक अर्थ 'संसार' तो है ही, दूसरा कवि शेख आलम भी है। बादशाह औंरगजेब अपने पुत्रों में सबसे ज्यादा शाह मुअज्जम को ही मानता था। उसी में वह अपनी छाया पूर्ण रूपसे देखता था। उक्त छंद की दूसरी पंक्ति में स्पष्ट है कि एक तरफ उसमें राज्य प्रशासन की भी क्षमता है और दूसरी ओर अल्लाहताला के प्रति हार्दिक लगाव भी। औरंगजेब नहीं चाहता था कि उसकी मृत्यु के बाद उसके राज्य का बंटवारा हो। अतः अपनी अंतिम इच्छा अपनी मृत्यु पूर्व सिरहाने लिखकर छोड़ गया था। शहंशाह औरंगजेब की मृत्यु के अनुसार शाह मुअज्जम बहादुरशाह के नाम से बादशाह भी बना। यह समय सन् 1707 ई. सन् 1712 में वह जाजमऊ के युद्ध में मारा गया। यही कवि आलम का समय रहा होगा।[5]

सरोजकार आलम को मुअज्जम के समसामयिक मानते हैं और सं. 1712 को उत्पत्ति काल बताते हैं। रचनाकाल संवत् 1735 से 1770 तक है।[6]

आचार्य विश्वनाथ प्रसाद मिश्र विद्वानों के उक्त मत से सहमत नहीं है। मिश्रजी की मान्यता है कि आलम बादशाह अकबर के समकालीन थे। उनका दृढ़विश्वास है कि आलम एक ही हैं और उनका कार्यकाल संवत् 1640 से संवत् 1680 तक माना जा सकता है।[7] मिश्रजी के उक्त मत को डॉ. राममूर्ति त्रिपाठी भी मान्यता देते प्रतीत होते हैं।[8] इस प्रकार कवि को अकबर का समकालीन तथा भक्तिकाल की स्वच्छंद प्रेमधारा का कवि माना जा सकता है।

कवि की 'माधवानल कामकंदला' नामक कृति के रचनाकाल को देखा जाये तो वह विक्रम संवत् 1602-03 निश्चित किया गया है।[9] अन्यत्र डॉ. राममूर्ति त्रिपाठी ने आलम का काल अकबरी टोडरमल का काल माना है।[10] इस प्रकार कवि का जीवन काल मुगलकाल में ही अर्थात अकबर और उसके बाद का ठहरता है।

आलम का जीवन वृत्त

हिन्दी कवियों की यह सबसे बड़ी विड़म्बना रही है कि उन्होंने अपने बारे में अधिक नहीं लिखा है और दूसरे अनेक समकालीन विद्वानों ने भी एक-दूसरे के बारे में विशेष सूचनाएं नहीं दीं। यदि किसी दूसरे कवि ने कुछ लिखा भी है तो वह या तो अतिरंजित है या फिर अनुमान पर आधारित है। यही बात आलम पर भी लागू होती है। आलम का जन्म और स्वर्गवास किस समय हुआ यह निश्चित रूप से कह पाना संभव नहीं है। जैसा कि ऊपर लिखा गया है बड़ी ऊहापोह के बाद आचार्य विश्वनाथ प्रसाद मिश्र ने आलम का जीवन काल विक्रम संवत् 1640 से 1680 तक माना है।[11]

आलम के दाम्पत्य जीवन के बारे में इतना प्रसिद्ध जरूर है कि उन्हें एक रंगरेजिन से इश्क हो गया था। इस घटना का उल्लेख हिन्दी साहित्य के प्रायः प्रत्येक इतिहासकार ने किया है। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने आलम और शेख के प्रणय प्रसंग को अपने हिन्दी साहित्य के इतिहास में स्थान दिया है। वे लिखते है -"शेख

रंगरेजिन भी अच्छी कविता करती थी। आलम के साथ प्रेम होने की विचित्र कथा प्रसिद्ध है। कहते हैं कि आलम ने एक बार उसे पगड़ी रंगने को दी जिसकी खूंट में भूल से कागज की एक चिट बंधी चली गयी। चिट में दोहे की आधी पंक्ति लिखी थी 'कनक छीर सी कामिनी काहे को कटि छीन।' शेख ने दोहा इस तरह पूरा करके 'कटि को कंचन काटि विधि कुचन मध्य धरि दीन, उस चिट को ज्यों का त्यों पगड़ी की खूंट में बाँधकर लौटा दिया। उसी दिन से आलम शेख के पूरे प्रेमी हो गये और अन्त में उसके साथ विवाह कर लिया।[12] मिश्र बंधुओं ने भी इस घटना की पुष्टि की है। मिश्र बंधु आलम को ब्राह्मण मानते हैं। शेख और आलम से उत्पन्न जहान नामक पुत्र का भी उल्लेख किया है।[13] डॉ. गणपति चन्द्र गुप्त ने भी आलम के प्रणय प्रसंग से सम्बन्ध उक्त कथा की पुष्टि की है।[14]

पंडित परशुराम चतुर्वेदी ने आलम को जौनपुर जिले के किसी भू-भाग का रहने वाला धनाढ्य ब्राह्मण माना है। आचार्य विद्यानिवास मिश्र तथा राममूर्ति त्रिपाठी उक्त मत को प्रमाणित नहीं मानते। विद्वानों में इस बात को लेकर भी मतभेद हैं कि शेख और आलम एक थे या आलम के नाम के साथ शेख लगता होगा। "मनीषियों का एक वर्ग जो यह मानता है कि आलम और शेख दो भिन्न व्यक्ति नहीं हैं, बल्कि एक ही व्यक्ति हैं और उसका नाम है शेख आलम। मिश्र बंधुओं ने इसी का अनुमोदन किया है। जिन विद्वानों का यह पक्ष है वे पुष्टि में कहते हैं कि 'शेख' नाम किसी स्त्री का नहीं हो सकता। कहीं सुना भी नहीं गया। दूसरे एक ही व्यक्ति विभिन्न नामों-छापों से रचना करता देखा गया है। सूर के ही पदों को लें, तो कहीं 'सूर' कहीं 'सूरस्याम' मिलता है। तीसरे, शेख मुसलमानों की एक उप जाति का भी नाम है, अतः उसकी भी संभावना की जा सकती है। चौथे, उपलब्ध ग्रन्थों की पुष्पिकाओं में 'शेख आलम' की जगह शेख और आलम लिखा गया होता। पर ऐसा नहीं है। पुष्पिकाओं में लिखा - (1) अथ कवि शेख आलम कृत कवित्त। (आदि भाग की पुष्पिका) (2) इति कवित्त शेख आलम के समाप्त (अंत भाग की पुष्पिका)।

पांचवे, (शेख आलम) का छंद विशेष के ढाँचे में प्रयुक्त प्रयोग बैठ नहीं पाता। छठे दोनों छाप की रचनाओं की भावभाषा इतनी एक रस है कि उसमें फर्क नजर नहीं आता। आचार्य पं. विश्वनाथ प्रसाद मिश्र का पक्षपात इसी ओर है। उन्होंने (हिन्दी साहित्य का अतीत) में इसे स्वीकार किया है।[15]

आलम की पत्नी शेख के लिए यह प्रसिद्ध है कि वह हाजिर जवाब थी। ऐसा कहते हैं कि आलम तथा शेख से एक पुत्र उत्पन्न हुआ था जिसका नाम था जहान। एक बार किसी ने मजाक में शेख से पूछा लिया - 'क्यों आप आलम (संसार) की पत्नी है' उसने तत्काल उत्तर दिया, 'हाँ आपको नहीं मालूम ? मैं जहान (संसार जिसमें स्पष्ट स्वयं सम्मिलित है) की माँ हूँ। इस घटना का उल्लेख मिश्र बंधुओं, राममूर्ति त्रिपाठी तथा आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने भी किया है।[16]

इससे अधिक आलम के सम्बन्ध में कोई विशेष जानकारी उपलब्ध नहीं होती है। इसलिए प्रामाणिक तथ्यों के अभाव में आलम के सम्बन्ध में और कुछ वर्णन सम्भव नहीं जान पड़ता है।

आलम की दो प्रकार की रचनाएं उपलब्ध होती हैं। मुक्तक रचनाएँ तथा प्रबन्ध रचनाएँ। मुक्तक रचनाओं के अन्तर्गत आलमकेलि तथा अक्षर मालिका रचनाएँ आती हैं जबकि प्रबन्ध रचनाओं के अंतर्गत माधवानल कामकंदला, श्याम सनेही

तथा सुदामा चरित। इन सभी रचनाओं को आलम ग्रन्थावली के अन्तर्गत डॉ. विद्यानिवास मिश्र ने संपादित किया है। इन रचनाओं को आलम ग्रन्थावली के अन्तर्गत डॉ. विद्यानिवास मिश्र ने संपादित किया है। इन रचनाओं को पढ़ने के बाद यह कहा जा सकता है कि कवि आलम में उच्च कोटि की साहित्यिक प्रतिभा के दर्शन होते हैं। आलम की रचनाओं का परिचयात्मक विवेचन निम्नांकित रूप से द्रष्टव्य है -

मुक्तक रचनाएँ

आचार्य विद्यानिवास मिश्र ने नागरी प्रचारिणी के खोज ग्रन्थों तथा विश्वनाथ प्रसाद मिश्र ने संकलन के आधार पर 'आलम केलि' तथा 'अक्षर मलिका' मुक्तक संग्रह अपनी ग्रन्थावली (आलम ग्रन्थावली) में सम्पादित किये हैं।

आलम केलि

'आलम केलि' मुक्तक संग्रह में वर्णन की दृष्टि से विषय वैविध्य उपलब्ध होता है। विवेच्य मुक्तक संग्रह में भक्तिपरक रचनाएँ, वात्सल्य, नायिका भेद, प्रेम निरूपण, भंवर गीत, अभिसार, विपरीत रति, प्रकृति वर्णन, अंग सौंदर्य तथा शांत रस के मुक्तक हैं। 'आलम केलि' में 396 छंद संकलित हैं।

भक्ति परक मुक्तक

भक्तिपरक मुक्तकों के अंतर्गत 'आलम केलि' में शिव को कवित्त, देवी को कवित्त, 'गंगा वर्णन' 'जमुना कुंच तथा 'दीनता' शीर्षक रचनाएं उल्लेखनीय हैं। आलम का मन हिन्दू देवी-देवताओं में रमा हुआ था।

वात्सलय परक मुक्तक

'आलम केलि' में संकलित वात्सलय परक छंदों में बाललीला तथा यशोदा की कृष्ण के प्रति उक्तियों को लिया जा सकता है। इन रचनाओं का केन्द्र बिन्दु श्रीकृष्ण का बाल रूप तथा उनकी बाल लीलाएं हैं। कवि की वात्सलय परक रचना का एक नमूना देखिए -

ऐसौ बारौ बार याहि बाहरौ न जान दीजे,
बार गये बौरी तुम बनिता संगन की ।
ब्रज टोना टामन निपट टोनहाई डोलैं,
मिटाउ टेव और के आंगन की।
'आलम' लै राई लौन वारि फेरि डारि नारि,
बोलि धौं सुनाइ धुनि कनक कंगन की ।
छीर मुख लपटाये छार बकुटनि भरें, छीया,
नेंकु छबि देखो छगन-मंगन की।[17]

प्रेम निरूपण

आलम मूलतः स्वच्छन्द प्रेम के कवि हैं। यही कारण है कि उनके काव्य में सर्वत्र प्रेम की महत्ता को व्यंजित किया गया है। उनके लिए उनका प्रिय ही सब कुछ है। इसलिए वे किसी लोक लज्जा, मर्यादा अथवा अन्य किसी अवरोध को प्रेम के मार्ग में स्वीकार नहीं करते।

अभिसार

'आलम केलि' में अभिसार के 7 छंद हैं। इन छंदों की विशेषता यह है कि कवि ने इनमें नायिका के अभिसार व्यापार के वर्णन में बुद्धि कौशल का परिचय दिया है। इन छंदों में विलम्ब विधान तथा सौंदर्य दर्शनीय है। जैसा कि निम्न पंक्तियों से स्पष्ट है -

प्रीतहि ते विपरीति रति रति मोति धंसै हंसि हंस विहगंम।
फूंद छुटी अटकी लट सों छिलकी छुटै अग्रज्यों गंग तरंगम।
हवा चल 'आलम' धार सहस्त्र है ह्या कुच मे सिरे सिव जंगम।
हार हिये हरि के जु लसै मानो होत सितासित सागर संगम।।[18]

अक्षर मालिका

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 सितम्बर 2018
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

वस्तुत: 'अक्षर मालिका' में भी 'आलम केलि' के समान ही विविध विषयों पर मुक्तक रचनाएँ संकलित हैं। 'अक्षर मालिका' में भी उन्हीं विषयों पर लिखे गये छंद मिलते हैं जिन विषयों पर 'आलम केलि' में उपलब्ध छंद हैं।

माधवानल कामकंदला

आलम ने 'माधवानल कामकंदला' की कथा का प्रारंभ भारतीय परम्परा के अनुरूप परब्रहम् के स्तवन से किया है। कवि के अनुसार इस प्रेम कथा का सम्बन्ध पुष्पावती नाम की नगरी से जहां पर गोपीचन्द नाम का राजा राज्य करता है इसे नगरी में माधवानल नाम का विरक्त ब्राह्मण है। वह ब्राह्मण वेद, पुराण, ज्योतिष तथा संगीत का ज्ञाता था। उसके वीणा वादन को सुनकर नगर की स्त्रियाँ मूर्छित हो जाती हैं। राजा इस शिकायत की जांच करता है। शिकायत सही पाये जाने के कारण माधवानल को देश निकाले की सजा मिलती है।

विवश होकर माधवानल पुष्पावती नगर छोड़कर चल देता है और दस दिन की यात्रा के बाद कामसेन राजा की राजधानी कामवती नगरी में पंहुचता है। कामवती पंहुचने पर माधव को पता चलता है कि राजभवन में कामकंदला का गायन हो रहा है। इसलिए माधव भी उसका गायन सुनने के लिए चल देता है। उसे पता चलता है कि तबला वादक के दाहिने हाथ में चार उंगलियाँ हैं जिससे संगीत और नृत्य का तालमेल नहीं बैठ पाता है। वह ये बात द्वारपाल से कहता है कि राजसभा में सभी अनाड़ी बैठे हैं। द्वारपाल यह बात राजा को बताता है। राजा उसके संगीत ज्ञान से प्रभावित होकर उसे सम्मानित करता है ।

राजसभा में माधव अपनी संगीत कला का उत्कृष्ट प्रदर्शन करता है। कामकंदला भी तन्मय होकर अपने नृत्य का विभिन्न भाव मुद्राओं में प्रदर्शन करती है। माधवानल ने कामकंदला के इस यौगिक नृत्य कौशल को देखा तो मुग्ध हो गया और राजा द्वारा दिए गए सम्मान की वस्तुओं को कामकंदला को दे दिया।

माधवानल कामकंदला का काव्य रूप

साहित्य मनीषियों द्वारा उल्लिखित महाकाव्य के लक्षणों के आलोक में यदि 'माधवानल कामकंदला' का मूल्यांकन करते समय यह आवश्यक प्रतीत होता है कि महाकाव्य के सम्बन्ध में दिये गये लक्षणों पर एक विहंगम दृष्टिपात कर लिया जाये। साहित्य दर्पणकार आचार्य विश्वनाथ ने लिखा है कि पद्य काव्य के प्रकारों में जो सर्गबन्ध्यात्मक काव्य प्रकार है उसे महाकाव्य कहा करते हैं। चरित्र वर्णन की दृष्टि से इस 'सर्गबन्ध' रूप में महाकाव्य में एक ही नायक का चरित्र वर्णन किया जा सकता है। रसाभिव्यंजना की दृष्टि से श्रृंगार, वीर और शांत रसों में से कोई एक ही रस किसी महाकाव्य में 'अंगी' अथवा 'प्रधान' रखा जाय। उपयोगिता की दृष्टि से महाकाव्य में धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष रूप पुरूषार्थ चतुष्टिक का काव्यात्मक निरूपण किया जाया करता है।

इनके अतिरिक्त अन्यान्य विशेषतायें भी महाकाव्य में पायी जाती है । जैसे महाकाव्य का आरम्भ मंगलात्मक, खलनिन्दा, प्रत्येक सर्ग में एक ही छंद का प्रयोग सर्गान्त में छंद परिवर्तन, कम से कम आठ सर्गो में कथा, सर्गान्त में अगले सर्ग में आने वाले वृत्त की सूचना, विविध वर्णन जैसे-संध्या, सूर्य, चन्द्र, रात्रि, प्रदोष, अंधकार, दिन, प्रातःकाल, मध्याह्न मृगया, पर्वत, ऋतु, वन-उपवन, समुद्र, संभोग, विप्रयोग, मुनि, स्वर्ग, नगर, यज्ञ, संग्राम, यात्रा विवाह, पुत्र जन्म आदि। महाकाव्य का नामकरण वर्ण्य चरित

अथवा नायक के नाम के अनुसार हुआ करता है।[19]

उपर्युक्त लक्षणों के आधार पर आलोच्य कृति की समीक्षा करने पर हम यह पाते हैं कि प्रस्तुत कृति में कतिपय लक्षणों का समावेश भी हुआ है। 'माधवानल कामकंदला' का नायक ब्राह्मण कुल में उत्पन्न है। वह अनेक विद्याओं और कलाओं का ज्ञाता नायक है। कवि के शब्दों में -

पहु पावति नग्र इक सुनौ । गोपीचंद राज वह गुनौ तिहिंपुर बसै सदा सुख त्यागी। माधौ विप्रनाम वैरागी।।

राजा पास प्रात रहि जावै । लै तुलसी दल देव पुजावै।

देव पुजाई बिप्र फिरि आवै । प्रातः भये पुनि दरस दिखावै।।

बांचे वेद पुरान, नौ व्याकरन बखानई।

जोतिक आगम जानि, सामुद्रिक सांगीत सब ।।

विद्या सोई बृहस्पति जानौ, रूप सोई मकर ध्वज मानौ ।।[20]

'माधवानल कामकंदला' का अंगीरस श्रृंगार के संयोग और वियोग दोनों रूपों का सुन्दर चित्रण हुआ है। सहायक रस वीर रस है। विवेच्य कृति का इतिवृत्ति लोकप्रिय है क्योंकि झस कथा को आधार बनाकर अन्य कवियों ने भी काव्य रचना की है परन्तु इसे प्रसिद्ध ऐतिहासिक इतिवृत्त के अन्तर्गत नहीं रखा जा सकता है।

पाश्चात्य समीक्षाशास्त्र की दृष्टि से महाकाव्य की परिभाषा निम्नांकित रूप में प्रस्तुत की जाती है "महाकाव्य बृहदाकार कथात्मक काव्यरूप है, जिसमें कुछ महत्वपूर्ण और गरिमायुक्त घटनाओं का वर्णन होता है और जिसमें कुछ चरित्रों के क्रियाशील और भंयकर कार्यो से भरे जीवन की कथा होती है उसके पढ़ने से हमें एक विशेष प्रकार का आनन्द प्राप्त होता है क्योंकि घटनाएँ और पात्र हमारे भीतरी मनुष्य की महत्ता, गौरव और उपलब्धियों के प्रति दृढ़ आस्था उत्पन्न करते हैं।"[21]

महाकाव्य के उपर्युक्त वर्णित लक्षणों के आलोक में विचार करने पर आलमकृत 'माधवानल कामकंदला' में कतिपय लक्षण ही मिल पाते हैं। यह तो वस्तुतः दो प्रेमी हृदयों के प्रेम और तड़प की कथा है जिसमें संघर्ष की स्थिति यत किंचित अवश्य देखी जाती है। महाकाव्य का आभास तो होता है परन्तु वास्तव में यह एक कथात्मक खण्डकाव्य और महाकाव्य के बीच की रचना कही जा सकती है।

माधवानल कामकंदला और सूफी प्रेमाख्यान

आलम कृत 'माधवानल कामकंदला' में वर्णित प्रेमकथा को देखकर उसमें सूफी प्रेमख्यान या मसनवी शैली की रचना होने का भ्रम हो सकता है। इस आशंका के पीछे कुछ ठोस आधार भी हैं जिन्हें संक्षेप में निम्न प्रकार से प्रस्तुत किया जा सकता है -

1 आलोच्य कृति की कथावस्तु पूर्णतया प्रेम पर आधारित है। नायक सूफी प्रेमाख्यान काव्यों की तरह नायिका के विरह में तड़पता है और उसे पाने के लिए प्रयत्नशील है।

2 'माधवानल कामकंदला' में सूफी प्रेमाख्यान काव्यों की तर्ज पर तत्कालीन शासक (शाहे वक्त) का वर्णन किया गया है

3 इस रचना में विरह वर्णन में यत्र-तत्र ऊहात्मक वर्णन भी मिलते हैं। नायिका के सौंदर्य वर्णन में नख-शिख वर्णन की पद्धति को अपनाया गया है। नायक नायिका के मिलन में बाधा स्वरूप कामसेन राजा को शैतान का प्रतीक मानने का भ्रम हो सकता है।

परन्तु केवल दो चार लक्षणों की उपस्थिति देखकर ही किसी काव्य कृति को सूफी प्रेमाख्यान

की मसनवी शैली की रचना नहीं माना जा सकता है। सूफी प्रेमाख्यान काव्य की सबसे बड़ी विशेषता यह होती है कि वह या तो अन्योक्तिपरक रचना होती है या फिर समासोक्ति। उसमें लौकिक कथा के साथ-साथ अलौकिक कथा अर्थात् प्रतीकात्मकता का समावेश हो जाता है। 'माधवानल कामकंदला' में इस अलौकिकता रहस्यात्मकता का नितान्त अभाव पाया जाता है। यह तो पूर्णतया लौकिक कथा को प्रस्तुत करती है।

श्याम सनेही

'श्याम सनेही' कवि आलम की दूसरी महत्वपूर्ण प्रबन्ध रचना है। इस प्रबन्ध रचना में कवि ने द्वारिकाधीश श्रीकृष्ण और रूक्मिणी के विवाह का वर्णन किया है।

श्याम सनेही की कथावस्तु का मूल आधार भागवत का दसवां स्कन्ध है। प्रस्तुत काव्य का प्रारम्भ भगवान शंकर की वंदना के साथ मंगलाचरण की विशेषता यह है कि कवि आलम ने 'माधवानल कामकंदला' में परमात्मा के निराकार स्वरूप की वंदना की है तो इसमें सगुण रूप शिव की। इससे यह सिद्ध होता है कि कवि की आस्था सगुण-निर्गुण के समन्वित रूप में है। मुस्लिम कवि होते हुए भी वह पूर्णतया हिन्दू संस्कारों से युक्त है। कथा का मूल केन्द्र कुन्दनपुर नामक नगर है जहां का राजा भीष्मसेन है अपने वंश की वृद्धि के लिए राजा और रानी शिवशक्ति की पूजा करते हैं। राजा की भक्ति को स्वीकार करके भगवान शिव राजा को चार पुत्र और एक कन्या प्रदान करते हैं। रूक्मिणी के युवा होने पर राजा भीष्मक श्रीकृष्ण से रूक्मिणी के सम्बन्ध की बात चलाते हैं। जब राजकुमार को यह पता चलता है तो वह इसका यह कहकर विरोध करता है कि हम कुलीन क्षत्रिय एक ग्वाले के साथ अपनी कन्या का विवाह कैसे कर सकते हैं। वह शासक शिशुपाल के साथ अनेक राजाओं की सेना से सुसज्जित हो बारात लेकर कुंदनपुर पंहुचता है। इस बारात पर शिव, ब्रहम् मिथ्या कौतुक समझकर हंसते हैं। रूक्मिणी को जब शिशुपाल की बारात का समाचार मिलता है तो वह बहुत दुःखी होती है। वह निराश हो आत्महत्या करने का विचार कर लेती है परन्तु माँ के समझाने पर ब्राहमण के माध्यम से कृष्ण को पत्र लिखकर वरण के लिए आमंत्रित करती है।

ब्राहमण ने कुंदनपुर लौटकर धाय के माध्यम से कृष्ण संदेश दिया - 'हरि आए आरती सवारहु' और कृष्ण कुंदनपुर पंहुचगये। कृष्ण के आगमन का कुंदनपुर वासियों को जब समाचार मिला तो वे बड़े प्रसन्न हुए। राजा भीष्मक ने कृष्ण का सत्कार किया कृष्ण के आगमन को सुनकर लोगों में अनेक प्रकार की चर्चायें होने लगी। रूकुम कुंवर इस समाचार से क्रोधित हो गये। विवाह का मुहूर्त निकला जानकर रूक्मकंवर ने राजमंदिर में कहा - संग की सभी सहेलियों को बुलाओ और पार्वती पूजन के लिए बहिन को ले आओ। जब रूक्मिणी मंदिर में गौरी पूजन कर रही थीं उसी समय श्रीकृष्ण अनुकूल समय जानकर रथ पर सवार होकर आ गये। रूक्मिणी को पाकर कृष्ण ने अपने रथ में बिठा लिया। वे जब कुंदनपुर से एक कोस आगे निकल गये तब लोग सचेत हुए। रूक्मिणी हरण के उपरान्त चारों ओर शोर-शराबा हो गया। सेनाओं ने श्रीकृष्ण का पीछा किया। दोनों सेनाओं का आमने-सामने भयानक युद्ध हुआ रुंड मुंड सब बहि चली रूधर नदी विकरार।

सुभग तरेरा सुंड धर पैरि पंहुचे पार ।।[12]

कृष्ण की विजय हुई और वे रूक्मिणी सहित द्वारिका पंहुचे। नगरवासी हर्षित हुए। घरघर

मंगलगान और बधाई होने लगी। श्रीकृष्ण और रूक्मिणी का मिलन हुआ और इस प्रकार 'श्याम सनेही' काव्य की कथा का सुखांत हुआ।

सुदामा चरित

'सुदामा चरित' कवि आलम की अंतिम प्रबन्ध रचना है। संपूर्ण कथा को कवि ने केवल 57 छंदों में समेट दिया है। आलोच्य कृति में कवि ने श्रीकृष्ण के 'गरीब नवाज' रूप का सुन्दर वर्णन किया है। इसकी कथावस्तु को संक्षेप में निम्नांकित रूप में प्रस्तुत किया जाता है -

बहुत गरीब सुदामा बावन निपट फजीहत में जब अटका।
सद पैबन्द लगी चादर को सिर बांधे जबून सा पलका।।
जूती भई टूटकर टुकड़े धोती भई फाटि कर कटका।
पर अपनी किस्मत पर राजी किसी वास्ते दिल नहीं भटका ।।[23]

फटेहाल दीन-दशा से ग्रस्त ब्राह्मण सुदामा भिक्षावृत्ति करके अपना जीवनयापन करता है। सुदामा की पत्नी इस दीन दशा से तंग आकर अपने पति से कहती है कि तुम कहते हो कि 'कृष्ण मेरे मित्र हैं।' वे राजा हैं और तुम उनके पास जाओ और अपनी दशा से अवगत कराओ तो वे अवश्य ही हमारी सहायता करेंगे। सुदामा पहले तो अपनी पत्नी को साफ मना कर देता है। परन्तु उसके बहुत अधिक जोर देने पर सुदामा कहते हैं कि द्वारिका के श्रीकृष्ण तो बहुत बड़े साहब हैं मैं उनके पास क्या तोहफा लेकर जाऊँगा। ब्राह्मणी अपनी पड़ोसन से कुछ चावल लाकर एक गठरी में बांधकर दे देती है।

वह सोचता है कि मैं तो गरीब हूँ और कृष्ण तो बहुत बड़े राजा हैं भला वह मुझसे क्यों मिलेंगे। द्वारिका पहुंचने पर सुदामा वहां के राजसी वैभव को देखकर आश्चर्यचकित हो जाते हैं। सुदामा के द्वारिका आगमन की सूचना जब द्वारिकाधीश श्रीकृष्ण को मिलती है तो वे दौड़कर सुदामा की अगवानी करते हैं। श्रीकृष्ण सुदामा को अपने महल में लाकर सिहांसन पर बिठाकर उनके पाँव धुला अंगौछे से पोंछकर उन पर सुगंध चढ़ाते हैं। सुदामा से श्रीकृष्ण पूछते हैं कि भाभी ने उनके लिए क्या भेजा है ? सुदामा संकोच के मारे चावल की पोटली को छिपाते हैं, परन्तु उस पर कृष्ण की नज़र पड़ ही जाती है। वे सुदामा से पोटली छीनकर उसमें से दो मुट्ठी दाना चबा लेते हैं और जब तीसरी चबाने लगते है तो लक्ष्मीजी उनका हाथ पकड़ लेती हैं। सुदामा की द्वारिका में अच्छी खातिरदारी होती है परन्तु प्रत्यक्ष रूप में कुछ नहीं दिया जाता। विदा होकर जब सुदामा लौटते हैं तो मन में विचार करते हैं कि पत्नी ने जिस उद्देश्य से भेजा था वह पूरा नहीं हो सका। परन्तु श्रीकृष्ण विश्वकर्मा को भेजकर सुदामा के लिए झोंपड़ी के स्थान पर भव्य राजप्रसाद का निर्माण करा देते हैं। घर पहुंचने पर सुदामा अपनी झोंपड़ी के न मिलने पर परेशान हो जाते हैं। यहाँ तक कि वह अपनी पत्नी तक को नहीं पहचान पाते हैं, परन्तु जब उसकी पत्नी स्वयं आगे आकर अपने भवन में ले जाती है तब उसे श्रीकृष्ण की उदारता और करूणा का पता चलता है। वे कृष्ण की इस उदारता के लिए अपनी कृतज्ञता ज्ञापित करते हैं और इस प्रकार 'सुदामा चरित' की कथा वस्तु का समापन होता है।

मूल्यांकन

भाषिक संरचना की दृष्टि से आलमकृत 'सुदामा चरित' का हिन्दी भाषा और साहित्य के इतिहास में महत्वपूर्ण स्थान है। कवि ने - सुदामा चरित' में अपनी अन्य कृतियों की तुलना में प्रचलित भाषा से हटकर 'रेख्ता' का प्रयोग है जो इस बात

का परिचायक है कि धीरे-धीरे लोक में खड़ी बोली हिन्दी के लिए रेख्ता पृष्ठभूमि का निर्माण करने के लिए भूमिका का निर्वाह करने लग गई और लोक ने उस पर अपनी मान्यता की मुहर अंकित कर दी थी। यद्यपि 'सुदामा चरित' पर पूर्वी भाषा का जिसमें ब्रज मिश्रित अवधी कहना अधिक समीचीन होगा का यथेष्ट प्रभाव है तथापि भारतीय आर्य भाषाओं के इतिहास में रेख्ता का यह प्रयोग भाषिक संरचना के परिवर्तन का स्पष्ट संकेत है।

कृष्ण और सुदामा की मैत्री से सम्बद्ध यह प्रसंग इतना मार्मिक रहा है कि अनेक हिन्दी कवियों ने इस कथा पर अपनी रचनायें प्रस्तुत की है। सर्वप्रथम भागवत के दशम स्कन्ध 81-82 वें अध्याय में इस कथा का उल्लेख मिलता है। सूरदास ने भी सूरदास के पद संख्या 4224 से 4244 के मध्य में इस कथा को वर्णित किया है इसके अतिरिक्त नन्ददास ने भी दोहा चौपाई छंद से इस कथा को पद्यबद्ध किया है। इसके अतिरिक्त सुदामा चरित से सम्बद्ध रचनाओं में सर्वाधिक लोकप्रियता प्राप्त हुई है। नरोत्तम ने संवत 1602 में इसकी रचना की थी यह एक संक्षिप्त खण्ड काव्य है, जो दोहा, कवित्त और सवैया छंदों में रचा गया है। कथा संगठन, नाटकीय विधान, भाव, भाषा, छंद, आदि सभी दृष्टियों से नरोत्तम कृत सुदामा चरित श्रेष्ठ रचना है तथा परवर्ती 'सुदामा चरित' सम्बन्धी रचनाओं को इससे प्रचुर प्रेरणा मिली है।[24] आलम ने विवेच्य कृति में चरित्र विधान की दृष्टि से सफलता प्राप्त की है। दैन्य ने सुदामा के मन को हीनता की ग्रन्थि से जकड़ लिया है उसका एक मर्मस्पर्शी चित्रण निम्नांकित पंक्तियों में द्रष्टव्य है -

झांके खड़ा दूर ते दुरबल जैसे मिरग भुआना बन का।
रहा चित्र सा होय दरवाजे, पठे न कदम भीतरा मन का।।
तब श्रीकृष्ण दीन के बंधों अंगीकार किया उस जन का।
आय धाय कर लिया बगल में मेटा ताप तुरत ही तन का ।।[25]

इस प्रकार 'सुदामा चरित' काव्य परम्परा में आलम का योगदान उल्लेखनीय है। कवि ने इस कृति में भाषा की दृष्टि से नूतन प्रयोग कर नया आयाम स्थापित किया है।

आलम के समकालीन कवियों के आलोक में जब हम विचार करते हैं तो पाते हैं कि आलम ने अपने युगीन कवियों की तुलना में अपनी एक विशिष्ट पहचान स्थापित की है। कालक्रम की दृष्टि से नन्ददास, केशवदास, अबुल रहीम खानखाना, न्यामत खां आदि लगभग एक ही युग के थे। ये सभी कवि अपने-अपने क्षेत्र में प्रभावशाली थे। इन सभी कवियों ने उच्चकोटि का काव्य सृजन किया था। नन्ददास कृष्ण भक्ति के गायक रहे तो केशवदास चमत्कार प्रधान दरबारी कवि, इसी प्रकार अबुल रहीम खानखाना भी अकबर के दरबार में रहते हुए नीति, श्रृंगार तथा भक्ति का उत्कृष्ट काव्य रचते रहे। न्यायमत खां जान ने मात्रा की दृष्टि से विपुल साहित्यक कृतियाँ प्रस्तुत की। आलम का हिन्दी काव्य को योगदान इस दृष्टि से महत्वपूर्ण है कि आलम ने स्वच्छंद परम्परा के कवि होते हुए भी विविध काव्य शैलियों में अपनी कृतियाँ प्रस्तुत की। एक ओर जहां आलम ने 'अक्षर मालिका' और 'आलम केलि' में उत्कृष्ट मुक्तक सजाये वहीं 'माधवानल कामकंदला' श्याम सनेही तथा 'सुदामा चरित' जैसी श्रेष्ठ प्रबन्ध रचनायें

प्रस्तुत की। भाषा के क्षेत्र में आपने विविध भाषाओं यथा ब्रज, अवधी तथा रेख्ता के माध्यम से अपनी प्रतिभा का परिचय दिया।

आलम के व्यक्तित्व और कृतित्व के सम्बन्ध में उपर्युक्त बिन्दुओं पर विचार करने के उपरान्त कहा जा सकता है कि आलम एक आदर्श प्रेमी थे। उन्होंने जो प्रेम की भावना से सराबोर विशाल हृदय पाया था। उन्होंने जिस काव्य को अपने अंदर अंकुरित किया वह मानवीय भावनाओं का अमूल्य दस्तावेज है। उस काव्य ने कवि की कारयित्री और भावयित्री प्रतिभा को उजागर किया है।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1 शुक्ल, आचार्य रामचन्द्र हिन्दी साहित्य का इतिहास, पृष्ठ 296

2. वही, पृष्ठ 296

3. मिश्र बन्धु विनोद, पृष्ठ 321

4. मिश्र, डॉ. विद्यानिवास (संपादक) आलम ग्रन्थावली भूमिका, पृष्ठ 4 पर उद्धृत

5. वही, पृष्ठ 4

6. वही, पृष्ठ 4

7. वही, भूमिका पृष्ठ 8

8. वही, भूमिका पृष्ठ 23

9. वही, भूमिका पृष्ठ 8

10. वही, भूमिका पृष्ठ 23

11. मिश्र, आचार्य विश्वनाथ प्रसाद: हिन्दी साहित्य का अतीत, पृष्ठ 62

12. शुक्ल, आचार्य रामचन्द्र: हिन्दी साहित्य का इतिहास, पृष्ठ 298

13. मिश्र, बंधु विनोद पृष्ठ 321

14. गुप्त, डॉ. गणपति चन्द्र: हिन्दी साहित्य का वैज्ञानिक इतिहास, प्रथम खण्ड, पृष्ठ 490

15. त्रिपाठी राममूर्ति आलम ग्रन्थावली भूमिका, पृष्ठ 3-4

16. (क) शुक्ल आचार्य रामचन्द्र : हिन्दी साहित्य का इतिहास, पृष्ठ 227

(ख) मिश्र बन्धु विनोद, पृष्ठ 6

(ग) त्रिपाठी : आलम ग्रन्थावली, भूमिका, पृष्ठ 3

17. मिश्र, विद्यानिवास (सम्पादित) आलम ग्रन्थावली, पृष्ठ 12-13

18. वही, पृष्ठ 100

19. साहित्य दर्पण:षष्ठ परिच्छेद श्लोक संख्या 315 से 325 तक हिन्दी अनुवाद

20. आलम ग्रन्थावली, पृष्ठ 148

21. फ्राम विर्चल टु मिल्टन पृष्ठ1 का हिन्दी अनुवाद

22. आलम ग्रन्थावली, पृष्ठ 254

23. वही, पृष्ठ 263

24. हिन्दी साहित्यकोश, भाग 2, पृष्ठ 601

25. आलम ग्रन्थावली, पृष्ठ 267